Learning Outcome based Curriculum Framework (LOCF)

For

Choice Based Credit System (CBCS)

Syllabus

B.A. (Honours) in Hindi

w.e.f. Academic Session 2020-21

Kazi Nazrul University

Asansol, Paschim Bardhaman
West Bengal 713340

Preamble

The objective of any programme at a Higher Education Institution is to create for its students a sound foundation for their character development which directly contributes to the well-being of a nation. Kazi Nazrul University envisions all its programmes in the spirit of its "motto" which is to inspire the youth to show steadfastness and devotion in a fearless pursuit of truth. The LOCF aims at preparing young minds for constructive and productive character development by honing their creative and humanistic skills for their own betterment as well as for the greater good of the society. In order to provide an opportunity to students to discover a method of thinking which will help them realise their true potential, the University offers a Learning Outcome-based Curriculum Framework (LOCF) for all its Under Graduate programmes.

The LOCF approach is intended to provide focused, outcome-based syllabi at the undergraduate level with an agenda to structure the teaching-learning experiences in a more student-centric manner by making the courses flexible and by offering students more choices. The LOCF approach has been adopted to strengthen the teacher- learner interaction as students engage themselves in programmes of their choice and learn to realize their inner calling. As the Under- Graduate Programmes focus on 'preparing minds', they will create individuals who will have intellectual prowess, interactive competence, courage to lead the world and also compassion and empathy for fellow human beings. The LOCF thus aims at strengthening not merely students' employability skills but also at imparting to them vital life-skills required to lead a happy personal and social life.

Each programme vividly elaborates its nature and promises the outcomes that are to be accomplished by studying the courses. The programmes also state the attributes that they offer to inculcate at the graduation level. The graduate attributes encompass values related to students' well-being, emotional stability, critical thinking etc. intermingled with a sense of social justice and harmony. In short, each programme prepares students for employability, sustainability and life-long learning. The new curriculum will empower students to innovate and also inspire them to convert their innovations into real business models for the country's economic and social prosperity. The proposed LOCF offers better understanding of the business world and aims at building students' entrepreneurial skills by giving them hands-on training. The Kazi Nazrul University hopes the LOCF approach of the programme will motivate students to transition from being passive knowledge-seekers to becoming active and aware knowledge-creators.

Semester-I

Course Name: Hindi Sahitya Ka Itihas : Ritikal tak

Course Code: BAHHINC101

Course Type: **Core** **(Theoretical)**	Course Details: **CC-1**			L-T-P: **5-1-0**	
Credit: **6**	Full Marks: **50**	CA Marks		ESE Marks	
		Practical	Theoretical	Practical	Theoretical
		……	**10**	……	**40**

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. विद्यार्थी 10वीं शताब्दी से अब तक के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और विशेष रूप से साहित्यिक सन्दर्भों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

2. हिन्दी साहित्य के विकासात्मक स्वरुप से परिचित हो सकेंगे

3. 11सौ वर्षों के हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।

4. हिन्दी साहित्य के रचानाकारों और रचनाओं से परिचित हो सकेंगे।

5. अपभ्रंश, राजस्थानी, मैथिली, भोजपुरी, अवधी,ब्रज भाषा,खड़ी बोली आदि के विकास को समझ पाने में समर्थ होंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई : एक

साहित्येतिहास लेखन की परंपरा |

काल विभाजन और नामकरण |

इकाई : दो

आदिकालीन काव्य : सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनैतिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि ।

आदिकालीन साहित्य : प्रमुख प्रवृत्तियाँ ।

सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो काव्य, लौकिक काव्य ।

आदिकालीन गद्य : सामान्य परिचय ।

इकाई : तीन

भक्तिकाल : सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा साहित्यिक पृष्ठभूमि, प्रमुख निर्गुण कवि, प्रमुख सगुण कवि।

भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ ।

भक्तिकालीन काव्य की विविध धाराएँ : निर्गुण काव्यधारा(संत काव्य, सूफी काव्य), सगुण काव्यधारा(रामभक्ति काव्य,कृष्णभक्ति काव्य) ।

इकाई : चार

रीतिकाल की सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनैतिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि ।

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ ।

रीतिकालीन काव्यधाराएँ : रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त ।

सहायक ग्रन्थ/सन्दर्भ ग्रन्थ :

1हिंदी साहित्य का इतिहास-रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

2 हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास-आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली

3 हिंदी साहित्य की भूमिका- आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली

4 हिंदी साहित्य का आदिकाल- आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली हिंदी

5 इतिहास और आलोचक दृष्टि- रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6 हिंदी साहित्य का आधा इतिहास –सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली
7 साहित्येतिहास : संरचना और स्वरूप-सुमन राजे, ग्रंथम प्रकाशन, कानपुर
8 हिंदी साहित्य का इतिहास-सं० डॉ० नगेन्द्र, मयूर पेपर बुक्स, नोएडा
9 रीतिकाव्य की भूमिका –डॉ० नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली
10 हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास –बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
11 हिंदी साहित्य का इतिहास- विजेंद्र स्नातक, साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली
12 साहित्य और इतिहास दृष्टि-मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
13 हिंदी साहित्य का इतिहास-विश्वनाथ त्रिपाठी, एन०सी०इ०आर०टी०. नयी दिल्ली
14 हिंदी गद्य : उद्भव और विकास- रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
15 हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास-रामकुमार वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
16. हिंदी साहित्य का नया इतिहास-रामखेलावन पाण्डेय, अनुपम प्रकाशन, पटना
17 साहित्य का इतिहास दर्शन-नलिन विलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
18 हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास-गणपतिचंद्र गुप्त,भारतेंदु भवन, चंडीगढ़
19हिंदी साहित्य का समेकित इतिहास-सं० डॉ० नगेन्द्र. हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

Semester-I

Course Name: Aadikalin evam madhyakalin kavya

Course Code: BAHHINC102

<table>
<tr><td>Course Type: C

(Theoretical)</td><td colspan="2">Course Details: CC-2</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:

50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1.विद्यार्थी हिंदी साहित्य के आदिकाल और मध्यकाल के *विकास, प्रवृत्तियों,* कविताओं *और रचनाकारों की जानकारी प्राप्त करेंगे।*

2. विद्यार्थी इसमें भारतीय कविता के अस्तित्व और भक्ति के तल के क्लासिकल रूप को जान सकते हैं।

3. विद्यार्थी आठ प्रतिनिध रचनाकारों की कुछ प्रमुख रचनाओं के पाठ को हृदयंगम कर सकेंगे।

4. आठ महत्वपूर्ण कवियों की रचनाओं की अंतर्वस्तु से परिचित हो सकेंगे।

5. भोजपुरी,मैथिली,अवधी,ब्रज भाषा की बानगियां विद्यार्थियों को यहां प्राप्त हो सकेगी।

6. हिन्दी की बोलियों की विविधता को समझ पाने में सक्षम हो सकेंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई : एक

विद्यापति (विद्यापति – शिवप्रसाद सिंह से **7 पद) : 1.** विदिता देवि विदिता हो(1) **2**. नंदक नन्दन कदम्बेरि तरुतरे(8) **3**. सुन रसिया, अब न बजाऊ बिपिन बंसिया(9) **4**. सैसव-जौवन दुहु मिलि गेल, स्रवनक पथ दुहु लाचन लेल(11) **5.** को हमे साँझक एकसरि तारा(51) **6.** मधुपुर मोहन गेल रे, मोरा बिदरत छाती(54) **7.** सरसिज बिनु सर सर बिनु सरसिज(83)

कबीर **(**कबीर ग्रंथावली –श्यामसुंदर दास से **7** पद **)** : 1.संतों भाई आई ज्ञान की आंधी रे(16) **2**. चलन चलन सब कोई कहत है, न जाने बैकुण्ठ कहाँ है (24) **3**. पांडे कौंन कुमति तोहि लागी (39) **4**. पंडित बाद वदंते झूठा (40) **5**.माया तजूं तजी नहीं जाइ(84) **6**. मन रे तन कागद का पुतला(92) **7.** हरि जननि मैं बालक तोरा(111) **.**

इकाई **:** दो

सूरदास (सूरदास सटीक –धीरेन्द्र वर्मा से **7 पद) : 1.** अबिगत-गति कछु कहत न आवै(विनय तथा भक्ति : 2) **2** . सिखवति चलन जसोदा मैया(गोकुल लीला : 20) **3.** मुरली तऊ गुपालहिं भावति(गोकुल लीला : 42) **4**. बुझत स्याम कौन तू गौरी(राधा-कृष्ण : 2) **5.** कोउ ब्रज बांचत नाहिंन पाती (उद्धव-सन्देश : 44) **6.** आए जोग सिखावन पांडे (उद्धव-सन्देश : 69) **7**. निरगुन कौन देस कौ बासी?(उद्धव-सन्देश : 77)

तुलसीदास(कवितावली के 'उत्तरकाण्ड' से **7 पद) :** - **1.** मनोराजु करत अकाजु भयो आजु लगि, चाहे चारु चीर, पै लहै न टूकु टाटको (66) **2**. ऊँचो मनु,ऊंची रुचि, भागु नीचो निपट ही, लोकरीति-लायक न, लंगर लबारु है (67) **3.** जातिके, सुजातिके, कुजाति के पेटागि बस खाए टूक सबके, बिदित बात दुनीं सो(71) **4.** किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भाट,चाकर,चपल नट,चोर,चार, चेटकी(96), **5**. कुल-करतूति-भूति-कीरति-सरूप-गुन-जौबन जरत जुर, परै न कल कहीं(98) **6.** धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलाहा कहौ कोऊ (106), **7.** लालची ललात बिललात द्वार-द्वार दीन, बदन मलीन, मन मिटै ना बिसूरना (148)

इकाई **:** तीन

मीराबाई **(**मीरा का काव्य-विश्वनाथ त्रिपाठी से **7** पद**) : 1.** आली री म्हारे णणा बाण पड़ी **2.** म्हारां री गिरिधर गोपाल दूसरा णा कूयां **3.** जोगिया जी निसदिन जोवां थारी बाट **4.** को बिरहिनी को दुःख जांणै हो **5.** पतियां मैं कैसे लिखूं, लिख्योरी न जाय **6**. भज मन चरण कंवल अवणासी 7**.** राम नाम रस पीजै मनआं, राम नाम रस पीजै

बिहारी(बिहारी-रत्नाकर : जगन्नाथ दास रत्नाकर से **15 दोहे) : 1.** बैठी रही अति सघन बन, पैठि सदन-तन माँह(52) **2.** कागद पर लिखत न बनत, कहत संदेसु लजात(60) **3.** या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोई(121) **4.** मोहन-मूरति स्याम की अति अद्भुत गति जोइ(161) **5.** बड़े न हूजै गुननु बिनु बिरद-बड़ाई पाइ(191) **6.** तजि तीरथ हरि राधिके(201) **7.** आड़े दे आले बसन जाड़े हूं की रात(283) **8.** सीस-मुकुट, कटि-काछनी, कर-मुरली, उर-माल (301) **9.** कोरि जातन कोऊ करू, परै न प्रकृतिहिं बीचु(341) **10.** लिखन बैठि जाकी सबी गहि गहि गरब गरूर(347) **11.** दुसह दुराज प्रजानु कौं क्यौं न बढ़ै दुःख-दंदु (357) **12.** दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर-चित प्रीति(363) **13**. समै समै सुन्दर सबै, रूप कुरूपु न कोई(432) **14**. बतरस-लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ (472) **15**. लटुआ लौं प्रभ-कर गहैं निगुनी गुन लपटाइ(501)

इकाई **:** चार

भूषण (स्वर्ण मञ्जूषा–नलिनविलोचन शर्मा, केसरी कुमार से **7 पद) : 1.** पावक तुल्य अमीतन को भयो (1) **2**. जै जयति, जै आदि-सकति जै कालि, कपर्दिनि(3) **3.** इंद्र जिमि जम्भ पर बाडव ज्यौं अंभ पर(5) **4.** बासब-से बिसरत बिक्रम की कहा चली(11) **5.** मद-जलधरन दुरद-बल राजत(12) **6.** भुज-भुजगेस की वै संगिनी भुजंगिनी-सी (17) **7**. साजि चतुरंग बीर-रंग में तुरंग चढ़ि(20)

घनानंद (घनानंद कवित्त : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र से **7 पद)** : **1**. झलकै अति सुन्दर आनन गौर (2) **2.** पहिलें घन-आनंद सींचि सुजान कहीं बतियाँ अति प्यार पगी (10) **3.** तब तो छबि पीवत जीवत है, अब सोचन लोचन जात जरे(13) **4.** रावरे रूप की रीति अनूप, नयो-नयो लागत ज्यौं-ज्यौं निहारियै (15) **5**. अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बांक नहीं (82) **6**. घन आनंद प्यारे सुजान सुनौ जिहि भांतिन हौं दुःख-सूल सहौं (88) **7**. पूरन प्रेम को मंत्र महा पण जा मधि सोधि सुधारि है लेख्यौ (97)

सहायक ग्रन्थ/सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. विद्यापति –शिवप्रसाद सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. कबीर ग्रंथावली –सं० श्यामसुंदर दास, नागिरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
3. सूरसागर सटीक –सं०- धीरेन्द्र वर्मा, साहित्य भवन प्रा० लिमिटेड, इलाहाबाद
4. कवितावली- तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर
5. मीरा का काव्य- सं० विश्वनाथ त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
6. बिहारी रत्नाकर- जगन्नाथ प्रसाद रत्नाकर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. घनानंद-कवित्त –सं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, संजय बुक सेंटर, वाराणसी
8. स्वर्ण-मंजूषा- सं० नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार; मोतीलाल-बनारसी दास,दिल्ली
9. कबीर- हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. भक्ति-काव्य यात्रा-रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

11. हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि- द्वारिका प्रसाद सक्सेना, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
12. भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य- मैनजर पांडेय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
13. सूरदास –आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागिरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
14. गोस्वामी तुलसीदास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
15. लोकवादी तुलसीदास-विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
16. घनानंद – लल्लन राय, साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली
17. रीतिकाव्य की भूमिका –डॉ० नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली
18. बिहारी-विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, संजय बुक सेंटर, वाराणसी
19. महाकवि भूषण- विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, संजय बुक सेंटर, वाराणसी
20. सूरदास –सं० हरवंशलाल शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
21. घनानंद और स्वच्छंद काव्यधारा–मनोहरलाल गौड़, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
22. महाकवि सूरदास –नंददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद
23. सूरदास – ब्रजेश्वर वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

Semester-I

Course Name: Hindi Cinema

Course Code: BAHHINGE101

<table>
<tr><td>Course Type: GE

(Theoretical)</td><td colspan="3">Course Details:

GEC-1</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:

50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

*1.*यह पेपर हिंदी सिनेमा के इतिहास, परम्परा, उसके वैविध्य पहलुओं, सिनेमा और समाज के संबंध और प्रभाव की जानकारी देगा। शोध कार्य में यह जानकारी महत्वपूर्ण होगी।

*2.*टेलीविज़न के हिन्दी चैनल के वैविध्य रूप,उसके प्रस्तुत कार्यक्रम की जानकारी, उसका मूल्यांकन और समाज पर उसके प्रभाव का ज्ञान होगा ।

3. विद्यार्थी हिन्दी सिनेमा के विकास से परिचित हो सकेंगे।

4. समाज पर हिन्दी सिनेमा के पड़ रहे प्रभाव के विश्लेषण में सक्षम होंगे।

5. हिन्दी सिनेमा के गीत-संगीत की व्याप्ति की समझ विकसित होगी।

6. चार प्रतिनिधि हिन्दी फिल्मों के मूल्यांकन के माध्यम से सिनेमा के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि विकसित होगी।

Content/ Syllabus:

इकाई-1: हिन्दी सिनेमा का संक्षिप्त इतिहास

इकाई-2: हिन्दी सिनेमा में भारतीय समाज
समाज पर हिन्दी सिनेमा का प्रभाव

इकाई-3: हिन्दी सिनेमा के गीत :वस्तु और शिल्प

इकाई- 4 :फिल्म समीक्षा
1 मदर इंडिया
2 तीसरी कसम
3 शोले
4 तारे जमीं पर

सहायक ग्रन्थ/सन्दर्भ ग्रन्थ :

1 हिन्दी सिनेमा का इतिहास- मनमोहन चड्ढा
2 सिनेमा आज और कल –विनोद भारद्वाज
3 हिन्दी सिनेमा के सौ वर्ष –प्रकाशन विभाग
4 हिन्दी सिनेमा के सौ वर्ष –प्रहलाद अग्रवाल
5 सिनेमा का जादुई सफर –प्रताप सिंह

Semester-I

Course Name: Television ke Hindi Channel

Course Code: BAHHINGE102

<table>
<tr><td>Course Type: GE
(Theoretical)</td><td colspan="2">Course Details: GEC-1</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1.यह पेपर हिंदी टेलीविजन चैनल के इतिहास, परम्परा, उसके वैविध्य पहलुओं, सिनेमा और समाज के संबंध और प्रभाव की जानकारी देगा। शोध कार्य में यह जानकारी महत्वपूर्ण होगी।

*2.*टेलीविज़न के हिन्दी चैनल के वैविध्य रूप,उसके प्रस्तुत कार्यक्रम की जानकारी, उसका मूल्यांकन और समाज पर उसके प्रभाव का ज्ञान होगा।

3. विद्यार्थी टेलिविजन के अब तक के विकास को समझ पाने में समर्थ होंगे।

4. समाचार, मनोरंजन, अध्यात्म, खोज परक, बच्चों के चैनल की विविधता और उपयोगिता का विश्लेषण कर सकेंगे।

5. टेलीविजन के समाज पर पड़ रहे प्रभाव का मूल्यांकन कर सकेंगे।

6. सूचना और ज्ञान के स्रोत के रुप में टेलीविजन की उपयोगिता आंक सकेंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1: टेलीविजन के हिन्दी चैनल : संक्षिप्त इतिहास

इकाई-2: टेलीविजन के हिन्दी चैनल :
समाचार चैनल
मनोरंजन चैनल
बच्चों के चैनल
ज्ञान –विज्ञान के चैनल

इकाई-3 : टेलीविजन के हिन्दी चैनल : भाषा

इकाई- 4 : टेलीविजन के हिन्दी चैनल : मूल्यांकन
1 आज तक
2 एपिक
3 पोगो
4 डी.डी .भारती

सहायक ग्रंथ :
1 टेलीविजन की भाषा – हरिश्चंद्र बरनवाल
2 टेलीविजन लेखन –असगर वजाहत,प्रभात रंजन
3 मीडिया समग्र- 11खंड – जगदीश्वर चतुर्वेदी

Semester –II

Course Name: Hindi Sahitya Ka Itihas : Aadhunik Kaal

Course Code BAHHINC201

<table>
<tr><td>Course Type: Core
(Theoretical)</td><td colspan="2">Course Details: CC-3</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की उत्पत्ति, विकास,प्रवृत्तियों और रचनाकारों की जानकारी प्राप्त करेंगे |

2)हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल से परिचित करवाना।

3)आधुनिक काल के विभिन्न युगों का परिचय कराना।

4)आधुनिक काल के कवियों की उपादेयता से परिचित करवाना।

5)इस काल में विकसित होने वाली विधाओं से परिचित करवाना।

Content/ Syllabus:

इकाई -1: आधुनिक काल :

- नवजागरण : सामान्य परिचय ।
- भारतेन्दु युग : पृष्ठभूमि,प्रवृतियाँ तथा प्रमुख कवि ।
- द्विवेदी युग : पृष्ठभूमि,प्रवृतियाँ तथा प्रमुख कवि ।

इकाई -2 : छायावाद : पृष्ठभूमि,प्रवृतियाँ तथा प्रमुख कवि ।

इकाई -3 : छायावादोत्तर काव्य : पृष्ठभूमि,प्रवृतियाँ तथा प्रमुख कवि ।

इकाई -4 :

- हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास।
- हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास।
- हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास ।
- हिन्दी निबंध का उद्भव और विकास ।
- हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास ।

सहायक ग्रंथ:

1- हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल

1- आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ – नामवर सिंह
2- छायावाद – नामवर सिंह
3- हिन्दी साहित्य का आधुनिक इतिहास – बच्चन सिंह
4- हिन्दी का गद्य साहित्य – रामचन्द्र तिवारी
5- हिन्दी साहित्य का इतिहास –(संपादक) नगेन्द्र
6- हिंदी साहित्य कोश – भाग 1 तथा 2

Semester –II

Course Name: Aadhunik Hindi Kavita : Chhayavad Tak

COURSE CODE : BAHHINC202

<table>
<tr><td>Course Type: Core
(Theoretical)</td><td colspan="2">Course Details: CC-4</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1)भारतेंदु युग से छायावाद युग तक के कवियों का परिचय करवाना।

2)छायावाद युग तक के कवियों तथा काव्य-संग्रहों से परिचित करवाना।

3)छायावादी काल तक के कवियों के अवदान से परिचित करवाना।

Content/ Syllabus:

इकाई : एक

भारतेंदु : दशरथ-विलाप, बसंत, प्रात समीरन, नये ज़माने की मुकरी(भारतेंदु समग्र से)

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : पवनदूत प्रसंग ('प्रियप्रवास' के षष्ठ सर्ग का छंद सं०-26 से 83 तक)

इकाई : दो

मैथिलीशरण गुप्त : हम कौन थे क्या हो गए, सखि वे मुझसे कहकर जाते, प्रियतम तुम श्रुति पथ से

रामनरेश त्रिपाठी : कामना, अतुलनीय जिनके प्रताप का, पुष्प विकास(कविता कोश से संग्रहित)

इकाई : तीन

जयशंकर प्रसाद : बीती विभावरी जाग री, मेरे नाविक, तुमुल कोलाहल कलह में, पेशोला की प्रतिध्वनि

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : बादल राग-6, जागो फिर एक बार, तोड़ती पत्थर, स्नेह निर्झर बह गया है

इकाई : चार

सुमित्रानंदन पन्त : नौका-विहार, ताज, यह धरती कितना देती है, भारत माता

महादेवी वर्मा : मैं नीर भरी दुःख की बदली, विरह का जलजात जीवन, मधुर-मधुर मेरे दीपक जल, हे चिर महान

सहायक ग्रन्थ / सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. प्रसाद, निराला, पन्त और महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ –संपादक वाचस्पति पाठक, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. प्रियप्रवास – अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', हिंदी साहित्य कुटीर, वाराणसी
3. भारत भारती– मैथिलीशरण गुप्त,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली
4. यशोधरा- मैथिलीशरण गुप्त, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली
5. प्रसाद-निराला-अज्ञेय –रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. निराला की साहित्य साधना, खंड-2, -रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
7. निराला : आत्महंता आस्था –दूधनाथ सिंह , लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8. निराला की कविताएँ और काव्यभाषा –रेखा खरे, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. सुमित्रानंदन पन्त –डॉ० नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली

10. महादेवी : परमानंद श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
11. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि –द्वारिका प्रसाद सक्सेना, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
12. सुमित्रानंदन पन्त –कृष्णदत्त पालीवाल, साहित्य अकादेमी, इलाहाबाद
13. सुमित्रानंदन पन्त : जीवन और साहित्य(2 भाग), राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
14. मैथिलीशरण गुप्त- नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
15. भारतेंदु ग्रंथावली खंड-3, संपादक-ओमप्रकाश सिंह, प्रकाशन संसथान, नयी दिल्ली
16. भारतेंदु समग्र- सं० हेमंत शर्मा, प्रचारक ग्रंथावली परियोजना, हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी

Semester –II

Course Name: Rachanatmak Lekhan

COURSE CODE : BAHHINGE201

Course Type: **GE**	Course Details: GEC-2		L-T-P: **5-1-0**	
Credit: **6**	Full Marks: **50**	CA Marks		ESE Marks	
		Practical	Theoretical	Practical	Theoretical
		……	**10**	……	**40**

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. **लेखन क्षमता तथा वर्तनी का ज्ञान ।**
2. **भाषा कौशल का विकास होगा ।**
3. **कविता, कथा साहित्य की आधार्भूत तत्त्वों का ज्ञान होगा।**
4. **कथेतर साहित्य की की संरचना की जानकारी मिलेगी।**

- ***Content/ Syllabus:***

इकाई-1 . रचनात्मक लेखन की अवधारणा , स्वरूप और सिद्धांत।

भाव एवं विचार की रचना में रूपांतरण की प्रक्रिया – गद्य , पद्य में।

इकाई-2. रचनात्मक लेखन : भाषा संदर्भ।

अनौपचारिक-औपचारिक , मौखिक-लिखित , क्षेत्रीय ।

इकाई.3- कविता और कथा साहित्य की आधारभूत संरचनाओं का अध्ययन ।

इकाई.4- कथेतर साहित्य एवं अन्य विधाओं का अध्ययन।

संदर्भ ग्रंथ

1. रचनात्मक लेखन - सं. रमेश गौतम , प्रभात रंजन
2. आधुनिक हिंदी कविता में बिम्ब विधान - केदारनाथ सिंह
3. कविता रचना प्रक्रिया - कुमार विमल
4. हिंदी कहानी का शैली विज्ञान - बैकुंठनाथ

Semester –II

Course Name: Patkatha Tatha Samvad Lekhan

COURSE CODE : BAHHINGE202

Course Type: **GE**	Course Details: GEC-2			L-T-P: **5-1-0**	
Credit: **6**	Full Marks: **50**	CA Marks		ESE Marks	
		Practical	Theoretical	Practical	Theoretical
		……	**10**	……	**40**

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1)पटकथा और संवाद लेखन से परिचित करवाना।

2)फीचर लेखन,टी.वी धारावाहिक तथा डॉक्यूमेंट्री के बीच के अंतर से परिचित करवाना।

3)संवाद कौशल को विकसित करना।

Content/ Syllabus:

इकाई : 1. पटकथा : अवधारणा और स्वरूप
इकाई : 2. फ़ीचर फ़िल्म, टी. वी. धारावाहिक एवं डॉक्यूमेंट्री की पटकथा
इकाई : 3. संवाद: सैद्धांतिकी और संरचना
इकाई : 4. फीचर फिल्म, टी.वी.धारावाहिक एवं डॉक्यूमेंट्री का संवाद लेखन

सहायक ग्रंथ –

1.पटकथा लेखन – मनोहर श्याम जोशी

2.टेलीविजन का लेखन – असगर वजाहत

3.कथा-पटकथा – मन्नू भंडारी

4.रेडियो लेखन – मधुकर गंगाधर

Semester-II

Course Name: Hindi Communication

COURSE CODE : AECCH201

<table>
<tr><td>Course Type: AE</td><td colspan="2">Course Details: AECC-2</td><td colspan="2">L-T-P: 4-0-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 4</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1)आधुनिक काल की विभिन्न साहित्यिक विधाओं से परिचित करवाना।

2)कविता, कहानी ,निबंध तथा व्यंग्य साहित्य की महत्ता सिद्ध करते हुए इस क्षेत्र के महत्वपूर्ण साहित्यकारों से परिचित कराना।

3) इन सभी विधाओं की भाषागत विविधता से परिचित कराना।

Content/ Syllabus:

इकाई 1 – कविता :-

निराला –राजे ने अपनी रखवाली की (kavitakosh.org)

नागार्जुन -बातें – (kavitakosh.org)

रघुवीर सहाय – आपकी हँसी (kavitakosh.org)

कात्यायनी - अपराजिता (kavitakosh.org)

इकाई-2 कहानी :-

प्रेमचंद- नशा (मानसरोवर भाग-1)

शिवमूर्ति – सिरी उपमा जोग (www.hindisamay.com)

इकाई-3. निबंध :-

भारतेंदु- भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है ? (www.hindisamay.com)

राहुल सांकृत्यायन – स्त्री घुमक्कड़ (घुमक्कड़ शास्त्र-राहुल सांकृत्यायन)

इकाई-4. व्यंग्य :-

हरिशंकर परसाई – भारत को चाहिये जादूगर और साधु (वैष्णव की फिसलन-हरिशंकर परसाई)

ज्ञान चतुर्वेदी - मूर्खता में ही होशियारी (www.hindisamay.com)

संदर्भ –

1. कवि निराला – नंददुलारे बाजपेयी
2. निराला की साहित्य साधना – रामविलास शर्मा
3. नागार्जुन का रचना संसार – विजय बहादुर सिंह
4. नागार्जुन का काव्य – अजय तिवारी
5. हिंदी कहानी का विकास – मधुरेश
6. समकालीन कहानी के रचनात्मक आशय – यदुनाथ सिंह
7. हिंदी गद्य की विविध विधाएँ – हरिमोहन
8. हिंदी की प्रमुख विधाएँ – बैजनाथ सिंहल

Semester –III

Course Name : Bhasha Vigyan Aur Hindi Bhasha

COURSE CODE : BAHHINC301

<table>
<tr><td>Course Type: Core
(Theoretical)</td><td colspan="2">Course Details: CC-5</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="2">Credit: 6</td><td rowspan="2">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td></td><td></td><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. विद्यार्थी हिंदी भाषा के विकास क्रम और उसकी बोलियों की पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी हिंदी भाषा की ध्वनियों और समय-समय पर उन में हुए परिवर्तन को समझ सकेंगे।
3. विद्यार्थी राजभाषा, राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी भाषा के महत्व को समझ सकेंगे।
4. विद्यार्थी को हिंदी भाषा का समुचित और तर्कसंगत ज्ञान हो सकेगा।

Content/ Syllabus:

इकाई-1: भाषा :परिभाषा, भाषा और बोली | भाषा विज्ञान: सामान्य परिचय, भाषा विज्ञान के अंग, अध्ययन की पद्धतियाँ |

इकाई-2:ध्वनि विज्ञान : परिभाषा, ध्वनि उच्चारण के अवयव, ध्वनि का वर्गीकरण तथा ध्वनि परिवर्तन की दिशाएँ।

इकाई- 3 :हिंदी भाषा का विकास : हिंदी भाषा परिवार की विभिन्न बोलियाँ, सामान्य परिचय, खड़ीबोली हिंदी का विकास ।

इकाई-4: हिंदी के विभिन्न रूप : राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्क भाषा, हिंदी का मानकीकरण।

संदर्भ ग्रंथ :

1- भाषा विज्ञान प्रवेश एंव हिंदी भाषा—डॉ.भोलानाथ तिवारी
2- भाषा विज्ञान की भूमिका – देवेंद्र नाथ शर्मा
3- भाषा विज्ञान सैद्धांतिक चिंतन-रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
4- हिन्दी भाषा का इतिहास-- डॉ.भोलानाथ तिवारी
5- हिन्दी भाषा—हरदेव बाहरी
6- प्रयोजनमूलक हिंदी—विनोद गोदरे
7- प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग—दंगल झाल्टे
8- व्यवहारिक हिंदी पत्राचार-- दंगल झाल्टे
9- मानक हिंदी का शुद्धीपरक व्याकरण—रमेशचंद्र मलहोत्रा
10- मानक हिंदी स्वरूप और संरचन—डॉ.रामप्रकाश
11- परिष्कृत हिंदी व्याकरण—बदरीनाथ कपूर

Semester –III

Course Name : Chhayavadottar Hindi Kavita

COURSE CODE : BAHHINC302

<table>
<tr><td>Course Type: Core
(Theoretical)</td><td colspan="2">Course Details: CC-6</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. विद्यार्थी छायावादोत्तर हिंदी कविता के सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक संदर्भ को समझ सकेंगे।
2. विद्यार्थियों में छायावादोत्तर हिंदी कविता संवेदना और अभिव्यक्ति की समझ विकसित होगी।
3. विद्यार्थियों में छायावादोत्तर हिंदी कविता के भाषा शिल्प की समझ विकसित होगी।
4. विद्यार्थी जीवन यथार्थ के साथ साथ मनुष्य और प्रकृति के गहरे संबंधों को बेहतर रूप में समझ सकेंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1: दिनकर – रश्मिरथी(तृतीय सर्ग)

अज्ञेय- कलगी बाजरे की, नदी के द्वीप।

इकाई-2: मुक्तिबोध—चाँद का मुँह टेढ़ा है।
नागार्जुन- प्रतिबद्ध हूँ, बहुत दिनों के बाद।

इकाई-3 : धूमिल- रोटी और संसद, गाँव।
रघुवीर सहाय- आत्महत्या के विरुद्ध, खड़ी स्त्री।

इकाई- 4: अरुण कमल- अपनी केवल धार , पुतली में संसार।
अनामिका- जनम ले रहा है एक नया पुरुष-1 , नमक।

संदर्भ ग्रंथ :

1- मुक्तिबोध का रचना संसार- सं.गंगा प्रसाद विमल
2- गजानन माधव मुक्तिबोध-सं. लक्ष्मण दत्त गौतम
3- मुक्तिबोध का साहित्यिक विवेक और उनकी कवित—लल्लन राय
4- अज्ञेय की काव्य-तितीर्षा: नंदकिशोर आचार्य
5- कविता के नये प्रतिमान-- नामवर सिंह
6- अज्ञेय :- सं. विश्वानाथ प्रसाद तिवारी
7- नागार्जुन की काव्यप्रक्रिया—अशोक चक्रधर
8- समकालीन बोध और धूमिल का काव्य – हुकुमचंद्र राजपाल
9- नागार्जुन का रचना संसार—विजय बहादुर सिंह
10-रघुवीर सहाय का कवि कर्म—सुरेश शर्मा
11-रघुवीर सहाय का काव्य : एक अनुशीलन—मीनाक्षी
12-समकालीन कविता और धूमिल—मंजुल उपाध्याय
13-समकालीन हिंदी कविता—विश्वानाथ प्रसाद तिवारी
14-कविता के देशकाल—मुक्तेश्वरनाथ तिवारी
15-कविता का समकालीन प्रमेय—अरुण होता

Semester –III

Course Name : Hindi Natak Aur Ekaanki

COURSE CODE : BAHHINC303

<table>
<tr><td>Course Type: Core
(Theoretical)</td><td colspan="2">Course Details: CC-7</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practica
l</td><td>Theoretic
al</td><td>Practical</td><td>Theoretic
al</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. स्वातंत्र्योत्तर भारतीय सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।
2. विद्यार्थियों को सामाजिक ,सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का ज्ञान हो सकेगा।
3. नाटक और एकांकी का अभिनय करके विद्यार्थियों में अभिनय कला का विकास हो सकेगा।
4. विद्यार्थियों में संवाद लेखन कला का समुचित विकास हो सकेगा।

Content/ Syllabus:

नाटक :-

इकाई-1:ध्रुवस्वामिनी : जयशंकर प्रसाद

इकाई-2:आधे-अधूरे—मोहन राकेश

इकाई-3: बकरी : सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

एकांकी –

इकाई:- 4

1: सूखी डाली—उपेंद्रनाथ अश्क

2: औरंगजेब की आखिरी रात- राम कुमार वर्मा

3: स्ट्राइक- भुवनेश्वर

संदर्भ ग्रंथ :

1- आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच-नेमिचंद्र जैन
2- प्रसाद के नाटक स्वरूप और संरचन—गोविंद चातक
3- समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच—जयदेव तनेजा
4- हिन्दी नाटक- जयदेव तनेजा
5- हिंदी एकांकी उद्भव और विकास—डॉ. रामचरण महेंद्र
6- हिंदी एकांकी—सत्येंद्र
7- एकांकी और एकांकी—डॉ. सुरेंद्र यादव

Semester –III

Course Name : Vigyapan Aur Hindi

COURSE CODE : BAHHINSE301

<table>
<tr><td>Course Type: SE</td><td colspan="2">Course Details: SEC-1</td><td colspan="2">L-T-P: 4-0-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 4</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. विद्यार्थी विज्ञापन के विविध रूपों से परिचित हो सकेंगे।
2. विद्यार्थियों में विज्ञापन लेखन कौशल का विकास हो सकेगा।

Content/ Syllabus:

इकाई-1: विज्ञापन की परिभाषा

इकाई-2 : विज्ञापन के प्रकार और उद्देश्य

इकाई-3: विज्ञापन एजेंसियाँ और उद्योग

इकाई-4 : विज्ञापन की भाषा शैली और हिंदी

संदर्भ ग्रंथ :

1- मीडिया लेखन कला—सूर्यप्रकाश दीक्षित
2- मीडिया लेखन—डॉ.यू.सी. गुप्ता
3- व्यवहारिक पत्रकारिता-- डॉ.यू.सी. गुप्ता
4- मीडिया लेखन और सम्पादन कला—गोविंद प्रसाद
5- जनसम्पर्क, स्वरुप और सिद्धांत—डॉ.राजेंद्र प्रसाद

Semester –III

Course Name : Social Media

COURSE CODE : BAHHINSE302

<table>
<tr><td>Course Type: SE</td><td colspan="2">Course Details: SEC-1</td><td colspan="2">L-T-P: 4-0-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 4</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के विविध आयामों की समझ विकसित होगी।
2. विद्यार्थी मीडिया की निरंतर बदलती हिंदी भाषा से परिचित हो सकेंगे।
3. इंटरनेट के उपयोग को जान पाएगा ।

Content/ Syllabus:

इकाई-1 : इंटरनेट

इकाई-2 : विकीपीडिया

इकाई-3 : यू ट्यूब

इकाई-4 : फेसबुक

संदर्भ ग्रंथ :

1- मीडिया समग्र 11 खंड—जगदीश्वर चतुर्वेदी
2- इंटरनेट विज्ञान—नीति मेहता
3- जनसम्पर्क स्वरुप और सिद्धांत—डॉ. राजेंद्र प्रसाद

Semester –III

Course Name : Anuvad

COURSE CODE : BAHHINGE301

<table>
<tr><td>Course Type: GE
(Theoretical)</td><td colspan="2">Course Details: GEC-3</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. विद्यार्थी अनुवाद के प्रयोजन और प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
2. कार्य करने की क्षमता का विकास विद्यार्थियों में होगा।
3. विद्यार्थियों में अच्छे अनुवादक बनने की इच्छा जागृत हो सकेगी।
4. अनुवाद की प्रयोजन तथा प्रक्रिया की समझ विद्यार्थियों में विकसित होगी।

Content/ Syllabus:

इकाई1-. अनुवाद का अर्थ, परिभाषा , स्वरूप और क्षेत्र।

इकाई2-. भारत में अनुवाद की परम्परा।

इकाई -3. अनुवाद : प्रकृति और प्रकार , अनुवाद : महत्त्व और सीमाएँ।

इकाई-4. समतुल्यता का सिद्धांत और अनुवाद |

संदर्भ ग्रंथ:-

1. अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और अनुप्रयोग – सं. डॉ. नगेंद्र
2. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा – कुमार सुरेश
3. अनुवाद विविध आयाम – मा. गो. चतुर्वेदी और कृष्ण कुमार गोस्वामी
4. अनुवाद विज्ञान सिद्धांत और प्रविधि – भोलानाथ तिवारी
5. अनुवाद कला कुछ विचार – आनंद प्रकश खेमाज
6. अनुवाद विज्ञान – भोलानाथ तिवारी
7. अनुवाद विज्ञान भूमिका – कृष्ण कुमार गोस्वामी

Semester –III

Course Name : Patrakarita

COURSE CODE : BAHHINGE302

<table>
<tr><td>Course Type: GE</td><td colspan="2">Course Details: GEC-3</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. कार्य करने की क्षमता का विकास विद्यार्थियों में होगा।
2. इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के विविध पक्षों की समझ विद्यार्थियों में विकसित होगी।
3. विद्यार्थी .पत्रकारिता क्षेत्र की बारीकियों को समझ सकेंगे और पत्रकारिता क्षेत्र में सृजन कार्य कर सकेंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई1-. हिंदी पत्रकारिता का उद्भव और विकास।

इकाई .2-प्रिंट माध्यम की पत्रकारिता : चुनौतियाँ एवं उपलब्धियाँ।

इकाई3-. इलेक्ट्रानिक माध्यम की पत्रकारिता : चुनौतियाँ एवं उपलब्धियाँ।

इकाई4-.साहित्यिक पत्रकारिता एवं पीत पत्रकारिता |

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी पत्रकारिता : स्वरूप और संदर्भ- विनोद गोदरे

2. समाचार, फिचर लेखन और सम्पादन कला – हरिमोहन

3. समाचार संकलन और लेखन- नंदकिशोर त्रिखा

4. हिंदी पत्रकारिता का विकास – एन. सी.पंत

5. आधुनिक पत्रकारिता- अर्जुन तिवारी

6. लघु पत्रिकाएं और साहित्यिक पत्रकारिता – धर्मेंद्र गुप्त

7. जनमाध्यम प्रौद्योगिकी और विचारधार-जगदीश्वर चतुर्वेदी

Semester-IV

Course Name: Prayojanamoolak Hindi

COURSE CODE : BAHHINC401

<table>
<tr><td>Course Type: C</td><td colspan="2">Course Details: CC-8</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. भाषा को शुद्ध रूप से पढ़ना, लिखना और बोलना सीखेंगे |
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी की उपादेयता को समझ सकेंगे ।
3. प्रशासनिक पत्राचार के स्वरूप और प्रकार को समझते हुए, प्रशासनिक पत्रों का मसौदा तैयार कर सकेंगे।
4. कार्यालयी हिन्दी में अनुवाद की आवश्यकता से परिचित होने के अलावा कार्यालयीन अनुवाद की समस्या और चुनौतियों को भी जान सकेंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1. प्रयोजनमूलक हिंदी : अर्थ , उपयोगिता और प्रयोग क्षेत्र ।

इकाई-2. प्रशासनिक पत्राचार : सरकारी पत्र , अर्ध-सरकारी पत्र , कार्यालयी ज्ञापन और अनुस्मारक, निविदा, परिपत्र , अधिसूचना ।

इकाई-3: कार्यालयी हिंदी में अनुवाद की भूमिका।

इकाई-4: कार्यालयीन अनुवाद की समस्याएँ एवं चुनौतियां।

संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रयोजनमूलक हिंदी – विनोद गोदरे
2. हिंदी पत्रकारित और जनसंचार—ठाकुरदत्त आलोक
3. प्रयोजनमूलक हिंदी सिद्धांत और प्रयोग—दंगल झाल्टे
4. राजभाषा हिंदी—भोलानाथ तिवारी

Semester-IV

Course Name: Hindi Upanyas

COURSE CODE : BAHHINC402

Course Type: C	Course Details: CC-9		L-T-P: **5-1-0**	
Credit: **6**		CA Marks	ESE Marks	
		Practical	Theoretical	Practical	Theoretical

	Full Marks: **50**	……	**10**	……	**40**
Course Type: C	Course Details: CC-9			L-T-P: **5-1-0**	

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. भारतीय जीवनमूल्यों और मानवीय संदर्भों से छात्र परिचित हो सकेंगे।
2. प्रेमचंद के साहित्य में प्रतिबिंबित समाज और उनकी भाषा शैली से अवगत होते हुए नई चिंतन दृष्टि से समृद्ध हो सकेंगे।
3. जैनेन्द्र का जीवन परिचय और साहित्यिक लेखन से परिचित होते हुए त्यागपत्र उपन्यास में मनुवादी व्यवस्था के अंतर्गत स्त्री की यतनापूर्ण स्थिति को जान सकेंगे।
4. ग्लोबल गाँव के देवता, उपन्यास से छात्र आदिवासी समाज की स्थानीय समस्याओं को समझ सकेंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1: सेवासदन—प्रेमचंद

इकाई-2:त्यागपत्र — जैनेन्द्र

इकाई-3: आपका बंटी—मन्नू भंडारी

इकाई- 4 :ग्लोबल गाँव के देवता-- रणेंद्र

संदर्भ ग्रंथ :

1- प्रेमचंद विरासत का सवाल—शिवकुमार मिश्र
2- प्रेमचंद का पूनर्मूल्यांकन—शम्भुनाथ
3- प्रेमचंद और उनका युग—रामविलास शर्मा
4- हिंदी उपन्यास का इतिहास—गोपाल राय
5- हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा—रामदरश मिश्र
6- आधुनिकता और हिंदी उपन्यास – इंद्रनाथ मदान

7- उपन्यास समीक्षा के नए प्रतिमान—दंगल झाल्टे
8- हिंदी के आंचलिक उपन्यास और उनकी शिल्प विधि—आदर्श सक्सेना
9- उपन्यास की संरचना—गोपाल राय
10- प्रेमचंद के उपन्यसों का शिल्प विधान—कमल किशोर गोयंका
11- मैला आंचल – मधुरेश
12- फणीश्वरनाथ रेणु और मैला आंचल—गोपाल राय

Semester-IV

Course Name: Hindi Kahani

COURSE CODE : BAHHINC403

Course Type: C	Course Details: CC-10			L-T-P: **5-1-0**	
Credit: **6**	Full Marks: **50**	CA Marks		ESE Marks	
		Practical	Theoretical	Practical	Theoretical
		……	**10**	……	**40**

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. हिन्दी कहानी की विकास-यात्रा से परिचित हो सकेंगे।
2. प्रेमचंद की कहानी, सवा सेर गेहूं के माध्यम से किसानों के संघर्ष और पीड़ा से परिचित हो सकेंगे।

3. प्रसाद की कहानियों के माध्यम से प्रेम और उत्सर्ग के उदात्त भाव को आत्मसात् कर राष्ट्रप्रेम के महत्व को समझ सकेंगे।
4. बदलते परिवेश में कहानियों के प्रतिपाद्य का विवेचन कर सकेंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1 (क) : प्रेमचंद - सवा सेर गेहूँ

(ख) जयशंकर प्रसाद- गुंडा

इकाई-2 (क) : जैनेंद्र - पत्नी

(ख) अज्ञेय – सरणदाता

इकाई-3 (क) : उषा प्रियंवदा – वापसी

(ख) अमरकांत - दोपहर का भोजन

इकाई-4 (क) : उदय प्रकाश - दरियाई घोड़ा

(ख) संजीव – घर चलो दुलारी बाई

संदर्भ ग्रंथ --

1) मानसरोवर भाग-4 - प्रेमचंद

2) प्रतिनिधि कहानियाँ - जयशंकर प्रसाद

3) प्रतिनिधि कहानियाँ - जैनेन्द्र

4) सम्पूर्ण कहानियाँ - उषा प्रियंवदा

5) प्रतिनिध कहानियाँ - निर्मल वर्मा

6) प्रतिनिधि कहानियाँ - अमरकांत

7). हिंदी कहानी : उद्भव और विकास – डॉ. सुरेश सिंहा

8). हिंदी कहानी : पहचान और परख – सं. इंद्रनाथ मदान

9). कहानी : नयी कहानी – नामवर सिंह

10). कहानी शिल्प और संवेदना – राजेंद्र यादव

11). नयी कहानी संदर्भ और प्राकृति – देवीशंकर अवस्थी

12). हिंदी कहानी का विकास – मधुरेश

13). जनवादी कहानी – रमेश उपाध्याय

14). दलित साहित्य : बुनियाद सरोकार – कृष्णदत्त पालीवाल

15). यसपाल – मधुरेश

16). निर्मल वर्मा – सं. अशोक बाजपेयी

Semester-IV

Course Name: Hindi Ka Vaishvik Paridrishya

COURSE CODE : BAHHINGE401

Course Type: GE	Course Details: GEC-4		L-T-P :5 - 1 - 0	
Credit: **6**	Full Marks: **50**	CA Marks		ESE Marks	
		Practical	Theoretical	Practical	Theoretical
		……	**10**	……	**40**

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. हिन्दी की वैश्विक परिदृश्य में उपस्थिति, उपयोगिता संबंधी जानकारी से छात्र अवगत हो सकेंगे।
2. जनमाध्यमों में हिन्दी की स्थिति और इसकी आवश्यकता को जान सकेंगे ।
3. सूचना क्रांति और वैश्विक अर्थव्यवस्था के दौर में हिन्दी के सामने खड़ी चुनौतियों और संभावनाओं का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1: भाषाओं का वैश्विक परिदृश्य ।

इकाई-2 : हिंदी का वैश्विक परिदृश्य ।

इकाई- 3 : जनमाध्यमों में हिंदी ।

इकाई- 4: 21 वीं सदी में हिंदी की चुनौतियाँ।

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी का वैश्विक परिदृश्य – वेद प्रकाश उपाध्याय
2. हिंदी का विश्व संदर्भ – डॉ. करूणा शंकर उपाध्याय
3. हिंदी भाषा के बढ़ते कदम – ऋषभ देव शर्मा
4. वेब मीडिया और हिंदी का वैश्विक परिदृश्य –मुनीष कुमार
5. वैश्विक परिदृश्य में आज का भारत : समकालीन विमर्श के विविध सरोकार – वीरेंद्र सिंह यादव

Semester-IV

Course Name: Hindi Bhasha Shikshan

COURSE CODE : BAHHINGE402

Course Type: GE	Course Details: GEC-4		L-T-P: **5-1-0**	
Credit: **6**	Full Marks: **50**	CA Marks		ESE Marks	
		Practical	Theoretical	Practical	Theoretical
		……	**10**	……	**40**

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. भाषा की बारीकियों को समझ सकेंगे।
2. विद्यार्थी भाषा सीखने की सृजनात्मक प्रक्रिया को समझ सकेंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1: भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धांत ।

इकाई-2: हिंदी भाषा शिक्षण की विधियाँ।

इकाई-3: हिंदी भाषा पाठ्य पुस्तक : चयन एवं उपयोगिता।

इकाई-4: व्याकरण शिक्षण का उद्देश्य।

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी भाषा का समाजशास्त्र – रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
2. मीडिया और बाज़ारवाद – सं. रामशरण जोशी
3. शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार – एन. आर. स्वरूप सक्सेना
4. हिंदी शिक्षण – बी. एल. श्रमा एवं बी. एम. सक्सैना
5. हिंदी शिक्षण – रामसकल पाण्डेय
6. शिक्षण की तकनीकी – एन. आर. स्वरूप सक्सेना , एम. सी. ओबराय
7. शिक्षा सिद्धांत – एन. आर. स्वरूप सक्सेना

Semester-IV

Course Name: Sambhashan Kala

COURSE CODE : BAHHINSE401

<table>
<tr><td>Course Type: SE</td><td colspan="2">Course Details: SEC – 2</td><td colspan="2">L-T-P: 4 - 0 - 0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 4</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practica
l</td><td>Theoretic
al</td><td>Practical</td><td>Theor
etical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. विद्यार्थी में अच्छे वक्ता के गुणों का विकास हो सकेगा।
2. सम्भाषण की कला तथा उसके महत्त्व से परिचित हो पाएंगे।
3. नामवर सिंह, चित्रा मुद्गल जैसे विशिष्ठ रचनाकरों की सम्भाषण कला को पढ़ कर विद्यार्थी सम्भाषण की दक्षता हासिल कर पाएंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1: सम्भाषण कला

इकाई-2: सम्भाषण के महत्त्वपूर्ण सिद्धांत

इकाई- 3. अच्छे वक्ता के गुण

इकाई- 4. प्रमुख वक्ताओं की सम्भाषण कला

(क) नामवर सिंह

(ख) चित्रा मुद्गल

संदर्भ ग्रंथ :

1. भाषण कला - महेश शर्मा
2. भाषण और सम्भाषण की दिव्य क्षमता – पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य
3. आदर्श भाषण कला - चित्रभूषण श्रीवास्तव
4. अच्छी हिंदी सम्भाषण और लेखन - तेजपाल चौधरी

Semester-IV

Course Name: Karyalayi Hindi

COURSE CODE : BAHHINSE402

<table>
<tr><td>Course Type: SE</td><td colspan="2">Course Details: SEC-2</td><td colspan="2">L-T-P: 4 - 0 - 0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 4</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. कार्यालयी हिन्दी के स्वरूप और प्रयोग क्षेत्र को जान सकेंगे।
2. प्रशासनिक पत्राचार के प्रारूप और उनके प्रयोग संदर्भों को समझ सकेंगे।
3. कार्यालयी हिन्दी में अनुवाद की भूमिका और आवश्यकता पर प्रकाश डाल सकेंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1: कार्यालयी हिंदी : विविध स्वरूप

इकाई :2-प्रशासनिक पत्राचार : सरकारी पत्र , अर्द्धसरकारी पत्र, कार्यालय ज्ञापन, अनुस्मारक, निविदा, परिपत्र, अधिसूचना।

इकाई-3: कार्यालयी हिंदी में अनुवाद की भूमिका, कार्यालयीन अनुवाद।

इकाई-4: कार्यालयी और साहित्यिक अनुवाद में अंतर, अनुवाद की समस्याएं।

संदर्भ ग्रंथ :

4. प्रयोजनमूलक हिंदी – विनोद गोदरे
5. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग– दंगल झाल्टे
3. हिंदी पत्रकारित और जनसंचार—ठाकुरदत्त आलोक
4. प्रयोजनमूलक हिंदी सिद्धांत और प्रयोग—दंगल झाल्टे
5. राजभाषा हिंदी—भोलानाथ तिवारी

Semester- V

Course Name: Bharatiya Kavyashastra
Course Code: BAHHINC501

<table>
<tr><td>Course Type: Core
(Theoretical)</td><td colspan="2">Course Details: CC-11</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1 . विद्यार्थियों को भारतीय काव्यशास्त्र की जानकारी प्राप्त होगी |
2 . प्राचीन काव्यगत सिद्धान्तों और सम्प्रदायों की जानकारी के साथ-साथ काव्य-निर्माण की आवश्यक तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त होगा |
3. विद्यार्थी साहित्य की परिभाषा के साथ-साथ भारतीय काव्यशास्त्र साहित्य की परंपरा एवं काव्य-लक्षण पर भारतीय आचार्यों के मत-मतांतर से परिचित हो सकेंगे।
4. काव्यशास्त्र के विभिन्न सम्प्रदायों की जानकारी होने पर विद्यार्थियों में काव्य -पाठ को समझने की क्षमता विकसित हो सकेगी।
5. छात्र रस, अंलकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति आदि के अध्ययन से काव्य में इनका प्रयोग एवं उपयोगिता से परिचित हो सकेंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1. काव्य लक्षण, काव्य- हेतु, काव्य प्रयोजन।

इकाई-2. शब्द शक्तियाँ- अभिधा, लक्षणा, व्यंजना।

इकाई-3.रस-सिद्धांत : रसांग , रस-निष्पत्ति , साधारणीकरण।

इकाई-4. रसेतर सिध्दांत- इतिहास और परिचय, अलंकार, ध्वनि, रीति।

संदर्भ ग्रंथ

1. काव्य शास्त्र- भागीरथ मिस्र
2. रस मीमांसा - रामचंद्र शुक्ल
3. भारतीय काव्य शास्त्र- सत्यदेव चौधरी
4. भारतीय साहित्य शास्त्र (दोनों भाग)- बलदेव उपाध्याय
5. रस सिद्धांत—नगेंद्र
6. ध्वनि सम्प्रदाय और उनके सिद्धांत- भोला शंकर व्यास
7. भारतीय साहित्य शास्त्र—गणेश त्र्यंबक देशपांडे

Semester-V

Course Name: Pashchatya Kavyashastra
Course Code: BAHHINC502

<table>
<tr><td>Course Type: Core
(Theoretical)</td><td colspan="2">Course Details: CC-12</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. विद्यार्थी पश्चिमी परंपरा और विभिन्न पश्चिमी आलोचकों के विचारों सहित साहित्य-चिंतन की परंपरा से भी परिचित हो सकेंगे।
2. विद्यार्थियों में आलोचना-दृष्टि का विकास होगा।
3. प्लेटो, लोंजाइनस, टी. एस. इलियट, आई. ए.रिचर्डस के सिद्धांत के अध्ययन से विद्यार्थियों में विश्लेषण और सर्जनात्मक शक्ति का विकास हो सकेगा।

Content/ Syllabus:

इकाई-1. प्लेटो : काव्यलोचन , अरस्तू : अनुकरण, विरेचन , त्रासदी।

इकाई-2. लोंजाइनस : उदात्त , वर्ड्सवर्थ : काव्यभाषा।

इकाई-3. टी.एस. इलिएट : निर्वैयक्तिकता, वस्तुनिष्ट समीकरण एवं आई.ए.रिचर्डस का मूल्य-सिद्धांत एवं संप्रेषण-सिद्धांत।

इकाई-4. स्वच्छंदतावाद, मनोविश्लेषणवाद।

संदर्भ ग्रंथ

1. काव्य शास्त्र- भागीरथ मिस्र
2. पाश्चात्य काव्य शास्त्र- देवेंद्रनाथ शर्मा
3. भारतीय काव्य शास्त्र- सत्यदेव चौधरी
4. पाश्चात्य काव्य शास्त्र चिंतन- निर्मला जैन
5. पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धांत- शांति स्वरुप गुप्त
6. पाश्चात्य काव्य शास्त्र-सावित्री सिन्हा
7. पाश्चात्य काव्य शास्त्र सिद्धांत और वाद—सं. नगेंद्र
8. पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धांत-- निर्मला जैन एंव डॉ. कुसुम बाँठिया

Semester –V

Course Name: Bharatiya Evam Pashchatya Rangamanch Siddhant

Course Code: BAHHINDSE501

Course Type: **DSE** **(Theoretical)**	Course Details: **DSEC-1 & DSEC-2**		L-T-P: **5-1-0**	
Credit: **6**	Full Marks: **50**	CA Marks		ESE Marks	
		Practical	Theoretical	Practical	Theoretical
		……	**10**	……	**40**

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. पाठ्यक्रम अध्ययन करने के पश्चात विद्यार्थी नाटक, रंगमंच के विभिन्न प्रकार, हिंदी- नाट्यशास्त्र, नाट्य-लेखन के इतिहास का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी रंगमंच के विविध पहलुओं जैसे संवाद-लेखन, पटकथा-लेखन, ध्वनि-व्यवस्था, प्रसाधन आदि में विशेषज्ञता हासिल करने की आधार-भूमि को प्राप्त कर पायेगा।
3. भारतीय एवं पाश्चात्य रंगमंच को पढ़कर छात्र रंगमंच से जुड़ी बारीकियों को समझ पाएंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1. रंगमंच की भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणाएँ और इतिहास

इकाई-2. हिंदी साहित्य में रंगमंच की उपस्थिति और उसका विस्तार

इकाई-3. पाश्चात्य साहित्य में रंगमंच और उसका विस्तार

इकाई-4. आषाढ़ का एक दिन एवं आठवाँ सर्ग का रंगमंच की दृष्टि से विश्लेषण-विवेचन

संदर्भ ग्रंथ :

1. एकांकी और एकांकीकार : रामचरण महेन्द्र

2.हिन्दी एकांकी शिल्पविधि का विकास : सिद्धनाथ कुमार

3 . समानांतर : रमेशचन्द्र शाह

4. धर्मवीर भारती ग्रंथावली : संपा० चन्द्रकांत बांदिवडेकर
5. रंगमंच के सिंद्धात – सं. महेश आनंद, देवेंद्र राज अंकुर

6. रंगमंच का जनतंत्र—हृषीकेश सुलभ

Semester –V

Course Name: Hindi Vyakaran

Course Code: BAHHINDSE502

Course Type: **DSE** **(Theoretical)**	Course Details: **DSEC-1 & DSEC-2**			L-T-P: **5-1-0**	
Credit: **6**	Full Marks: **50**	CA Marks		ESE Marks	
		Practical	Theoretical	Practical	Theoretical
		……	**10**	……	**40**

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. व्याकरण का शुद्ध प्रयोग, शब्दों का ज्ञान, शुद्ध लेखन, व्यावहारिक प्रयोग छात्र सीख पाएंगे
2. भाषायी कौशल, वाचन, श्रवण, लेखन और पठन के गुणों को आत्मसात कर पाएंगे।
3. वाक्यों का शुद्ध चयन और सटीक प्रयोग सीख पाएंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1: संधि तथा समास, क्रियाविशेषण ।

इकाई-2 : शब्द शुद्धि , वाक्य शुद्धि ,मुहावरे और लोकोक्तियाँ।

इकाई-3: अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, विराम चिह्न।

इकाई-4: छंद (चौपाई, दोहा, कवित्त , सवैया, छप्पय) , अलंकार(अनुप्रास , यमक , श्लेष, रूपक,उत्प्रेक्षा) ।

संदर्भ ग्रंथ :

1- हिन्दी व्याकरण –कामता प्रसाद गुरु
2- हिन्दी व्याकरण –एन .सी .ई.आर. टी.
3- हिंदी व्याकरण शब्द और अर्थ—हरदेव बाहरी
4- शुद्ध हिंदी कैसे लिखें - आर. पी. सिन्हा
5- शुद्ध हिंदी - हदेव बाहरी
6- काव्य शास्त्र – भगीरथ मिश्र
7- काव्यांग पारिजात : डॉ. हरिचरन शर्मा
8- अलंकार मुक्तावली : देवेंद्रनाथ शर्मा
9- साहित्य-शास्त्र : राधावल्लभ त्रिपाठी

Semester –V

Course Name: Pustak Samiksha

Course Code: BAHHINDSE503

<table>
<tr><td>Course Type: DSE
(Theoretical)</td><td colspan="2">Course Details: DSEC-1 & DSEC-2</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2"></td><td colspan="2"></td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. पुस्तक-समीक्षा के माध्यम से समीक्षक पुस्तक या पुस्तक की रचनाओं, लेखक के रचनाकर्म को स्पष्ट करता है। इसके द्वारा पुस्तक समीक्षा के इतिहास से विद्यार्थी अवगत हो पाएंगे।
2. विद्यार्थी समीक्षा की अवधारणा के साथ-साथ हिंदी साहित्य में पुस्तक समीक्षा के इतिहास की परंपरा छात्र एवं छात्राएं परिचित हो सकेंगे।
3. पुस्तक-समीक्षा के माध्यम से पुस्तक के बारे में पाठकों को परिचित कराया जाता है। छात्र- छात्राएं में इसके माध्यम से आलोचनात्मक और तुलनात्मक विश्लेषण क्षमता का विकास हो सकेगा।

Content/ Syllabus:

इकाई-1. समीक्षा की अवधारणाएँ, स्वरूप तथा विशेषताएँ ।

इकाई-2. हिंदी साहित्य में पुस्तक समीक्षा का इतिहास ।

इकाई-3. पुस्तक समीक्षा के प्रतिमान।

इकाई-4. किसी एक पुस्तक की समीक्षा : 1. अकाल में सारस : केदारनाथ सिंह

अथवा

2. त्यागपत्र : जैनेंद्र कुमार

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी गद्य का विकास : रामचंद्र तिवारी
3. रचनात्मक लेखन : सं. रमेश गौतम, प्रभात रंजन
4. केदारनाथ सिंह विशेषांक : पाखी, जून-2018 (सं. प्रेम भरद्वाज)
5. जैनेंद्र साहित्य और समीक्षा : राम रतन भटनागर
6. केदारनाथ सिंह : चकिया से दिल्ली –सं. कामेश्वर सिंह

Semester –V

Course Name: Bharatiya Sahitya

Course Code: BAHHINDSE504

Course Type: **DSE** **(Theoretical)**	Course Details: **DSEC-1 & DSEC-2**			L-T-P: **5-1-0**
Credit: **6**	Full Marks: **50**	CA Marks		ESE Marks	
		Practical	Theoretical	Practical	Theoretical
		……	**10**	……	**40**

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. प्रत्येक साहित्य की अपनी विशेषताएं होती हैं। इस दृष्टि से भारत के विभिन्न भाषाओं का विद्यार्थी अध्ययन कर सकेंगे।
2. भारत बहुभाषा भाषी देश है किंतु भारत के विभिन्न सांस्कृतियों में एक प्रकार की सूत्रबद्धता है। इस प्रश्नपत्र के अध्ययन से विद्यार्थी उससे परिचित हो सकेंगे।
3. भारतीय साहित्य में भारत का बिम्ब एवं भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति से जुड़ी बारीकियों को छात्र समझ पाएंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1: भारतीय साहित्य का स्वरूप : आध्ययन की समस्याएँ।

इकाई-2 : भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिम्ब।

इकाई-3: भारतीयता का समाजशास्त्र ।

इकाई- 4 : हिंदी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति।

संदर्भ ग्रंथ :

1- भारतीय साहित्य—डॉ. नगेंद्र
2- भारतीय साहित्य की भूमिका—रामविलास शर्मा
3- भारतीय साहित्य आशा और आस्था—डॉ. आरसु
4- तुलनात्मक साहित्य भारतीय परिपेक्ष्य – इंद्रनाथ चौधरी
5- भारतीय साहित्य की पहचान : सं. सियाराम तिवारी, वाणी
6- भारतीय साहित्य : रोहिताश्व

Semester –V

Course Name : Hindi Bhashi Samaj Ka Sarvekshan

COURSE CODE : BAHHINDSE505

<table>
<tr><td>Course Type: DSE
(Practical)</td><td colspan="3">Course Details: DSEC-1&DSEC-2</td><td colspan="2">L-T-P: 0 - 2 - 8</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>30</td><td>……</td><td>20</td><td>……</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes

After the completion of course, the students have ability to :

1. हिंदी भाषी समाज का सामाजिक, सांस्कृतिक , ऐतिहासिक एवं आर्थिक स्थितियों का ज्ञान प्राप्त होगा।

2. हिंदी भाषी समाज की विकास की प्रेरणा उत्पन्न होगी।

3. हिंदी भाषी समाज की समस्याओं को दूर करने की भावना उत्पन्न होगी।

Content/ Syllabus:

निर्देश :- छात्रों को हिंदी भाषी समाज के किसी एक मुहल्ले का जिसमें न्यूनतम दस परिवार आते हों , का सामाजिक , सांस्कृतिक ,ऐतिहासिक एवं आर्थिक सर्वेक्षण करते हुए 5000 शब्दों में एक परियोजना प्रस्तुत करनी होगी ।

Semester –VI

Course Name: Hindi Nibandh Tatha Anya Gadya Vidhayen

COURSE CODE : BAHHINC601

<table>
<tr><td>Course Type: Core
(Theoretical)</td><td colspan="2">Course Details: CC-13</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes :

After the completion of course, the students have ability to :

1. हिंदी गद्य के कथा साहित्य से भिन्न अन्य गद्य विधाओं का ज्ञान प्राप्त होगा।
2. विभिन्न हिंदी की कथेतर विधाओं के स्वरूप का ज्ञान होगा।
3. युगीन संदर्भ के आलोक में कथेतर गद्य विधाओं को जान सकेंगे।
4. इनके अध्ययन से विद्यार्थी व्यक्तियों, स्थानों, प्रकृति एवं पर्यावरण से परिचित हो सकेंगे।
5. गंभीर भाव, चिंतन, हास्य और मनोरंजन से जुड़कर लाभान्वित होंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1: रामचंद्र शुक्ल- भय , हजारी प्रसाद द्विवेदी- अशोक के फूल ।

इकाई-2: विद्यानिवास मिश्र – बसंत आ गया कोई उत्कंठा नहीं, रामविलास शर्मा – निराला का अपराजेय व्यक्तित्व।

इकाई-3: महादेवी वर्मा- जंग बहादूर , राहुल सांकृत्यायन – विद्या और वय।

इकाई-4: मैत्रेयी पुष्पा -कस्तुरी कुंडल बसै (रे मन जाह , जहाँ तोहि भावे), फणीश्वर नाथ रेणु- सरहद के उस पार।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी का गद्य साहित्य- रामचंद्र तिवारी
2. हिंदी की गद्य विधाएँ- डॉ हरिमोहन
3. हिंदी आलोचना का उद्भव और विकास- नंदकिशोर नवल
4. हिंदी के रेखाचित्र- माखनलाल शर्मा
5. परम्परा का मूल्यांकन- रामविलास शर्मा

Semester –VI

Course Name : Hindi Aalochana

COURSE CODE : BAHHINC602

<table>
<tr><td>Course Type: Core
(Theoretical)</td><td colspan="2">Course Details: CC-14</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes :

After the completion of course, the students have ability to :

1. विद्यार्थियों में आलोचनात्मक विवेक एवं समीक्षात्मक दृष्टि का विकास होगा।

2. विद्यार्थियों में भाषा शिक्षण के संस्कारों का विकास होगा।

3. उत्तर पूर्व से संबंधित हिंदी आलोचकों के परिचय द्वारा राष्ट्रीय एकात्मक भाव का विकास एवं हिंदी की राजभाषा के रूप में स्वीकार्यता की पहचान होगी।

Content/ Syllabus:

इकाई .1-हिंदी आलोचना का प्रारम्भ और द्विवेदीयुगीन आलोचना।

इकाई . 2-आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना ।

इकाई 3- शुक्लोत्तर हिंदी आलोचना : हजारीप्रसाद द्विवेदी , नंददुलारे वाजपेयी।

इकाई.4- प्रगतिशील आलोचना की प्रवृतियाँ और रामविलास शर्मा , नामवर सिंह।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी आलोचना – विश्वनाथ त्रिपाठी
2. हिंदी आलोचना का विकास – नंदकिशोर नवल
3. हिंदी आलोचना शिखरों से साक्षात्कार – रामचंद्र तिवारी
4. हिंदी आलोचना का विकास – मधुरेश
5. आलोचना और विचारधारा – नामवर सिंह
6. साहित्य और इतिहास दृष्टि – मैनेजर पाण्डेय

Semester –VI

Course Name: Lok-Sahitya

COURSE CODE : BAHHINDSE601

<table>
<tr><td>Course Type: DSE
(Theoretical)</td><td colspan="2">Course Details: DSEC-3 & DSEC-4</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes

After the completion of course, the students have ability to :

1. लोक साहित्य की अवधारणा स्वरूप और संकलन के उद्देश्य का ज्ञान प्राप्त होगा।

2. विद्यार्थी वर्तमान वैश्वीकरण के युग में अपने अंचल विशेष के प्रभावी रूप से लेकर वैश्विक संदर्भ से जुड़ सकेंगे।

3. विद्यार्थियों को लोक साहित्य की भाव गंभीरता, संस्कृति, रूप और सहज अभिव्यक्ति का परिचय प्राप्त हो सकेगा।

Content/ Syllabus:

इकाई-1. लोक साहित्य की अवधारणाएँ , स्वरूप तथा विशेषताएँ।

इकाई-2. लोक साहित्य बनाम शिष्ट साहित्य।

इकाई-3. हिंदी साहित्य विविध विधाओं (कविता एवं कहानी) में लोक और उसकी उपस्थिति।

इकाई-4. लोक साहित्य : वर्तमान और भविष्य।

संदर्भ ग्रंथ -

1. हिंदी लोक साहित्य : सिद्धांत और विकास- डॉ. अनसूया अग्रवाल
2. लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग - डॉ. शिवराम शर्मा
3. लोक- सं. पीयूष दईया
4. लोक संस्कृति की रूपरेखा - डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
5. परम्परा और परिवर्तन - श्यामाचरण दुबे
6. लोकजीवन और साहित्य – डॉ. रामविलास शर्मा
7. लोकसंस्कृति और इतिहास – बद्रीनारायण
8. ग्राम गीत : रामनरेश त्रिपाठी

Semester –VI

Course Name : Bharatiya Sahitya : Pathaparak Adhyayan

COURSE CODE : BAHHINDSE602

<table>
<tr><td>Course Type: DSE
(Theoretical)</td><td colspan="2">Course Details: DSEC-3&4</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes

After the completion of course, the students have ability to :

1. प्रत्येक साहित्य की अपनी विशेषताएं होती हैं। इस दृष्टि से विद्यार्थी भारत की विभिन्न भाषाओं के साहित्य का अध्ययन कर सकेंगे।

2. भारत बहुभाषी देश है किंतु भारत के विभिन्न संस्कृतियों में एक प्रकार की सूत्रबद्धता है। इस प्रश्न पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी उससे परिचित हो सकेंगे।

3. भारतीय साहित्य के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

4. भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1. उपन्यास : संस्कार (यू. आर. अनंतमूर्ति)।
इकाई-2. कहानी : युद्ध , जनाजा (शानी)।

इकाई-3. निबंध : साहित्य का तात्पर्य , सभ्यता का संकट (रवींद्रनाथ ठाकुर)।

इकाई-4. आत्मकथा: अक्करमासी का पहला अध्याय (शरण कुमार लिम्बाले)।

संदर्भ ग्रंथ -

1. अक्करमासी - शरणकुमार लिम्बाले
2. प्रतिनिधि कहानियाँ – शानी
3. संस्कार – यू. आर. अनंतमूर्ति
4. रवींद्र रचना संचयन – सं. असित कुमार बंधोपाध्याय

Semester –VI

Course Name : Hindi Rangamanch

COURSE CODE : BAHHINDSE603

Course Type: **DSE** **(Theoretical)**	Course Details: **DSEC-3&4**		L-T-P: **5-1-0**	
Credit: **6**	Full Marks: **50**	CA Marks		ESE Marks	
		Practical	Theoretical	Practical	Theoretical
		……	**10**	……	**40**

Course Learning Outcomes

After the completion of course, the students have ability to :

1. विद्यार्थी रंगमंच के स्वरूप को जान सकेंगे।

2. लोकनाट्य और लोक रंगमंच के संबंध में जानकारी प्राप्त होगी।

3. इस पाठ द्वारा विद्यार्थी अपने ज्ञान और अनुभव से भावी हिंदी रंगमंच को समर्थ और सार्थक बनाने में समर्थ होंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1. हिंदी रंग चिंतन की शुरुआत , स्वरूप तथा विशेषताएँ ।

इकाई-2. हिंदी रंग चिंतन की परम्परा : सैद्धांतिक रचनाकार।

(भारतेंदु , जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश , भीष्म साहनी)।

इकाई-3. रंगमंच का सौंदर्यशास्त्र : नाट्यलेख , निर्देशन , प्रेक्षागृह और दर्शक।

इकाई-4. नाट्य- समीक्षा : ध्रुवस्वामिनी और कोणार्क।

संदर्भ ग्रंथ

1. रंगमंच के सिंद्धात – सं. महेश आनंद , देवेंद्र राज अंकुर
2. रंगमंच का सौंदर्यशास्त्र – देवेंद्र राज
3. अंकुर नाट्य दर्पण—मोहन राकेश
4. रंगमंच का जनतंत्र—हृषिकेश सुलभ

Semester –VI

Course Name : Asmitamoolak Vimarsh Aur Hindi Sahitya

COURSE CODE : BAHHINDSE604

<table>
<tr><td>Course Type: DSE
(Theoretical)</td><td colspan="2">Course Details: DSEC-3 & DSEC-4</td><td colspan="2">L-T-P: 5-1-0</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>……</td><td>10</td><td>……</td><td>40</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes:

(After the completion of course, the students will have ability to):

1. 21वीं सदी विमर्शों की सदी है, इस सदी में समाज के सभी वंचित समूहों ने अपने हक़, अधिकार और अपनी अस्मितागत की पहचान के लिए निर्णायक लड़ाई छेड़ रखी है। विद्यार्थी इस विमर्शगत अधिकार की लड़ाई से परिचित हो पाएंगे।

2. हिंदी साहित्य में इन तीन महत्वपूर्ण विमर्श (दलित, आदिवासी और स्त्री) में समाज के इन वंचित वर्गों ने आत्मकथा, कहानी, कविता, उपन्यास और अन्य विधाओं के माध्यम से साहित्य जगत में मुख्य धारा का ध्यान अपनी ओर खींचा है। इस विमर्शों के अध्ययन से विद्यार्थी अवगत हो पाएंगे।

Content/ Syllabus:

इकाई-1: अस्मितामूलक विमर्श की अवधारणा तथा विशेषताएँ।

इकाई-2 : स्त्री विमर्श की अवधारणा , साठोत्तरी गद्य साहित्य में स्त्री विमर्श।

इकाई-3: दलित विमर्श की अवधारणा , साठोत्तरी गद्य साहित्य में दलित विमर्श।

इकाई-4: आदिवासी विमर्श की अवधारणा, साठोत्तरी गद्य साहित्य में आदिवासी विमर्श।

संदर्भ ग्रंथ--

1. स्त्री संघर्ष का इतिहास—राधा कुमार
2. स्त्रीवादी साहित्य विमर्श—जगदीश्वर चतुर्वेदी
3. स्त्री मुक्ति का सपना—वसुधा विशेषांक(2014)
4. उपनिवेश में स्त्री—प्रभा खेतान
5. स्त्री स्मिता का प्रश्न—सुभाष सेतिया
6. दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र—शरण कुमार लिम्बाले
7. दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र—ओमप्रकाश वाल्मीकि
8. दलित विमर्श की भूमिका—कंवल भारती
9. दलित दर्शन—रमणिका गुप्ता
10. दलित लेखन का अंतर्विरोध—डॉ. रामकली सर्राफ
11. आदिवासी लोक- रमणिका गुप्ता

Semester –VI

Course Name : Hindi Sevi Sansthaon Ka Sarvekshan

COURSE CODE : BAHHINDSE605

<table>
<tr><td>Course Type: DSE
(Practical)</td><td colspan="3">Course Details: DSEC-3&4</td><td colspan="2">L-T-P: 0-2-8</td></tr>
<tr><td rowspan="3">Credit: 6</td><td rowspan="3">Full Marks:
50</td><td colspan="2">CA Marks</td><td colspan="2">ESE Marks</td></tr>
<tr><td>Practical</td><td>Theoretical</td><td>Practical</td><td>Theoretical</td></tr>
<tr><td>30</td><td>……</td><td>20</td><td>……</td></tr>
</table>

Course Learning Outcomes

After the completion of course, the students have ability to :

1. इस पाठ्यक्रम के तहत विद्यार्थी किसी संस्थान का सर्वेक्षण करने की पद्धति को सीख पाएंगे।
2. इस पाठ्यक्रम के तहत अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिंदी सेवी संस्थानों का हिंदी के प्रचार प्रसार के योगदान को जान पाएंगे।

निर्देश :- छात्रों को किसी एक विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, शोध संस्थान , पुस्तकालय तथा हिंदी सेवी संस्था के हिंदी सम्बंन्धी योगदान का सर्वेक्षण करते हुए अधिकतम 5000 शब्दों में एक लिखित परियोजना तैयार करनी होगी।